ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-4* Issue-12* January- 2020
Innovation The Research Concept

अध्यापक शिक्षा में सम्प्रेषण कुशलता : आवश्यकता एवं महत्व

शान्तनु गौड
असिस्टेंट प्रोफेसर
एन0एस0 कालिज ऑफ एजूकेशन
लहराडा, सोनीपत, हरियाणा, भारत

सुमन
असिस्टेंट प्रोफेसर
नारायण कॉलिज ऑफ एजूकेशन
रोहतक, हरियाणा, भारत

सारांश

शिक्षण का कार्य बिना सम्प्रेषण के नहीं हो सकता। प्रभावी शिक्षण के लिये यहाँ आवश्यक है कि सम्प्रेषण कला की जानकारी अध्यापकों को करायी जाये। जिससे वे सम्प्रेषण के विभिन्न पदों, सोपानों, विशेषताओं व सीमाओं से अवगत हो सकें। सम्प्रेषण व्यवहार की कुशलता की जानकारी से शिक्षक, बालकों की आवश्यकताओं के अनुरूप सम्प्रेषण कौशलों का प्रयोग करने में सक्षम हो सकेगा। प्रभावी सम्प्रेषण के लिये वातावरण बनाना चाहिए। इस वातावरण का निर्माण भी शिक्षक तभी कर सकेगा, जब उसे सम्प्रेषण कला के बारे में व्यवस्थित रूप से ज्ञान हो। सम्प्रेषण की योजना कैसे बनायी जाये तथा शिक्षण व्यवस्था में सम्प्रेषणात्मक व्यवहार को किस तरीके से, किस रूप में प्रदर्शित किया जाय जिससे बालक उससे ऊबे नहीं बल्कि रूचि प्रदर्शित करें।

पाठ्यक्रम में जिज्ञासा पैदा हो तथा वह अपनी मानसिक क्रिया द्वारा स्वयं समस्या समाधार करने में समर्थ हो सकें। अध्यापक के लिए आवश्यक है कि वह सम्प्रेषण कौशल में दक्ष हों, भाषा की कुशलता, छात्र–शिक्षक अन्तःक्रिया, व्यवहार एवं आधुनिक शैक्षिक उपकरणों का विधिवत ज्ञान भी आवश्यक है, जिनसे वह बालक के अनुसार विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न प्रकार के उद्दीपन प्रदान कर सकें। शिक्षण विधियों, युक्तियों, प्रविधियों को बालकों की आवश्यकताओं के अनुसार बदल सकें। केवल व्याख्यान से ही शिक्षण प्रभावी नहीं होता, सम्प्रेषण की कला में प्रश्नों की प्रवाहशीलता, आरोह–अवरोह, विभिन्न उद्दीपन तथा अध्यापन कौशल भी आवश्यक है। अध्यापक–शिक्षा में सम्प्रेषण की कला को स्थान देने से उपर्युक्त सभी बिन्दुओं पर समुचित प्रकाश पड़ेगा।

प्रस्तावना

अध्यापक शिक्षा की नवीन अवधारणा का प्रयोग ही इस रूप में किया जा रहा है कि जिससे स्तरीय अध्यापक तैयार हों, जो बालकों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के निर्माण के लिये सदैव प्रयत्नशील रहें। अध्यापन कसौटी, बालकों का अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन है, और इस व्यवहार परिवर्तन का स्वरूप वैज्ञानिक है, जो सीधे अधिगम से सम्बन्धित है। बिना अधिगम के बालक का विकास सम्भव ही नहीं। अतः प्रभावी अधिगम के लिये समप्रेषण की कला पहली शर्त है। शिक्षक, शिक्षण कार्य के समय विचारों के आदान–प्रदान हेतु कई शिक्षण युक्तियों, विधियों व प्रविधियों का प्रयोग करता है, इनके पीछे उसका मुख्य उद्देश्य बालक का अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन है। शिक्षक का कार्य, मात्र तथ्यों की सूचना देना नहीं है, बल्कि उसे तो ऐसे शैक्षिक वातावरण का निर्माण करना होता है, जो छात्र की योग्यताओं, दक्षताओं, क्षमताओं का यथेष्ट विकास कर सकें। इसलिये शिक्षक के लिये भी आवश्यक है कि वह सम्प्रेषण की वैज्ञानिकता के साथ उसकी कलात्मकता को भी समझे। उन बातों पर भी विचार करें जो बालकों को विषय–वस्तु शिक्षार्थी को ग्राह्य करायें। यद्यपि कक्षागत व्यवहार पर अनेक शोध–कार्य किये गये तथा शाब्दिक व अशाब्दिक व्यवहारों में वर्गीकृत करते हुए इस पूरी प्रक्रिया को वैज्ञानिक रूप प्रदान करने का प्रयास किया गया, फिर भी सामाजिक व्यवहारों की अस्थिरता के कारण ऐसी कोई एक विधि निश्चित न हो सकी, जो सभी परिस्थितियों में उपयुक्त हों। अतः अध्यापक शिक्षा में इस तथ्य पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए कि सम्प्रेषण की कला का रूप क्या हो?

सम्प्रेषण की अवधारणा :

एडगर डेल ने सम्प्रेषण के अर्थ को इन शब्दों में व्यक्त किया है कि ''परस्पर एक–दूसरे के विचारों एवं भावनाओं में समान स्तर पर भागीदारी रखना ही सम्प्रेषण है। हम कह सकते हैं कि सम्प्रेषण एक ऐसी प्रक्रिया है जो एक दूसरे के विचारों, सिद्धान्तों और तथ्यों को समझने का अवसर देती है। कक्षागत सम्प्रेषण में तीन बातें आवश्यक होती हैं – शिक्षक, शिक्षार्थी और सम्प्रेषण सामग्री। सम्प्रेषण तब माना जाता है जब किसी व्यक्ति के मस्तिष्क में कोई विचार उत्पन्न हो और वह दूसरों तक पहुँचे तथा उसे स्वीकार किया जाये। परन्तु किसी एक व्यक्ति को दी जाने वाली सूचना से सम्प्रेषण क प्रक्रिया पूरी नहीं होती। सम्प्रेषण की प्रक्रिया में सूचना भेजने वाला अकेले सम्प्रेषण की प्रक्रिया को पूरा नहीं कर सकता। सम्प्रेषण के लिये आवश्यक है कि लेने वाला व देने वाला दोनों ही सक्रिय हों। शिष्य भी जिज्ञासु व विनयशील हो। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है – **''तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया। उपदेशन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्वदर्शिनः।।''** अर्थात् शिष्य सेवाभावी हो, विनयशील हो तथा गुरु के चरणों में प्रणाम करके आदर पूर्वक गुरु के पास जाकर अपनी जिज्ञासा रखे तब वे ज्ञानी महापुरुष तुझे ज्ञान का उपदेश देंगे। यद्यपि आज ऐसे गुरु व शिष्य दोनों का मिलना कठिन है फिर भी यह आवश्यक है कि शिष्य जिज्ञासा रखें वह गुरु से प्रश्न, गुरु की परीक्षा लेने व मजाक करने के लिये न पूँछकर अपने ज्ञान को बढ़ाने का भाव हृदय में रखें तभी शिष्य सीखेगा, और इस दौरान जो भी सम्प्रेषण होगा वह अत्यधिक प्रभावी होगा क्योंकि दोनों मानसिक रूप से तैयार हैं।

वातावरण का निर्माण

प्रभावी सम्प्रेषण के लिये एक सुगठित वातावरण की आवश्यकता है। शिक्षक, शैक्षिक वातावरण तैयार करें। विद्यालय का बाह्य क्लेवर कुछ बोलता नजर आये, दीवारें, ज्ञानधारा से स्नात हों, विद्यालय में घुसते ही मन प्रसन्न हो जाये। छात्र, विद्यालय से भागने के लिये नहीं, बल्कि घर से विद्यालय की ओर दौड़ लगाने को उत्कंठित हो। उनके भीतर का वातावरण, विद्यालय के वातावरण से भी अधिक मुग्धकारी हो। वे स्वयं उमंगित हों उठें। शिक्षक प्रबन्धन का यह पहला उपक्रम है। विद्यालय के अन्दर का वातावरण मुग्धकारी तभी होगा, जब विषय वस्तु छात्रों पर थोपी न जाकर, सम्प्रेषण कौशल के माध्यम से उनकी जिज्ञासा जागृत करेगी। हिन्दी भाषा के शिक्षण बाल साहित्य की भूमिका (कविता, कहानी, नाटक, पहेली, एकांकी, अन्ताक्षरी, एकांकी आदि) किसी से छिपी नहीं है। इस प्रकार इतिहास के अध्ययन में प्रदर्शनी, संग्रहालय परिचर्चा आदि की भूमिका भी महत्वपूर्ण है।

सम्प्रेषण की कला एक व्यापक दृष्टिकोण है। प्रभावशाली शिक्षण और सम्प्रेषण एक–दूसरे के पूरक हैं। अतः प्रभावशाली शिक्षण हेतु शिक्षक को आधुनिक उपयोगी श्रव्य–दृश्य उपकरणों का प्रयोग करना चाहिए। इनके प्रयोग से यह अमूर्तज्ञान और सूचनाओं को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर सकेगा। अधिगमकर्ता की ज्ञानेन्द्रियाँ एक साथ सक्रिय होकर, उन्हें स्वयं अनुभव द्वारा सीखने को प्रेरित करेंगे। इनकी सहायता से पाठ्यवस्तु को रूचिकर बनाया जा सकता है। जिससे छात्रों में बोधात्मकता और अवधान केन्द्रण में सकारात्मक वृद्धि होगी।

सम्प्रेषण योजना

सर्वप्रथम विषय वस्तु पर मंथन करके शिक्षण की एक योजना बनानी होगी कि वह विषय सामग्री को बालकों के समक्ष किस रूप में प्रस्तुत करें? किन युक्तियों का प्रयोग करें? जिससे सम्प्रेषण का बाह्य रूप कलात्मक रहे और बालकों के ज्ञान में वृद्धि हो। छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टि विकसित हो तथा अपेक्षित व्यवहारों में परिवर्तन हो। शिक्षण के लिये जरूरी है कि इस पर मंथन करे कि सम्प्रेषण की प्रक्रिया जो तीन अंगों से जुड़ी हैं उसमें सूचना लेने एवं सूचना देने का क्रम कितना नियोजित एवं व्यवस्थित है, साथ ही यह भी जाँच की जाए कि शिक्षण उद्देश्य को प्राप्त करने में किस प्रकार शिक्षण कौशलों की आवश्यकता है। सम्प्रेषण, विचारों का आदान–प्रदान हैं, विचारों का थोपना नहीं। इसलिए यह आवश्यक है कि पहले ही शिक्षक, योजना बनाये कि वह विचारों को किस प्रकार व्यवस्थित रूप दें। कैसे उनको बच्चों तक पहुँचायें जिससे शिक्षण में प्रवाहशीलता बनी रहे। सम्प्रेषण योजना की कुशलता के लिये आवश्यक है कि शिक्षक की दृष्टि प्रत्येक तरफ खुली हुई व पैनी हो जिससे वह सूक्ष्म तथ्यों का विश्लेषण कर सके। सम्प्रेषण की योजना का रूप यदि वैज्ञानिक नहीं है अर्थात् उसमें क्रमबद्धता का अभाव है तो शिक्षक पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों को सफल रूप से संचालन नहीं कर सकेगा।

शिक्षण में सम्प्रेषणात्मक व्यवहार

शिक्षण के माध्यम से अध्यापक के द्वारा छात्रों तक ज्ञानात्मक सूचनाओं के साथ ही कौशलगत दक्षताओं एवं विचारात्मक अभिव्यक्ति की कुशलताओं को सम्प्रेषित करने का प्रयास किया जाता है। यह पूरी प्रक्रिया सम्प्रेषणात्मक व्यवहार है। इस व्यवहार में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन द्वारा छात्रों का ज्ञानात्मक, क्रियात्मक तथा भावात्मक विकास जुड़ा है। व्यवहार में परिवर्तन के लिए निरन्तर अभ्यास तथा प्रयोग की आवश्यकता होती है और ज्ञान तथा विश्वास का परिवर्तन करने के लिये बौद्धिक विकास की अपेक्षा की जाती है, क्योंकि जब हम किसी विषय–वस्तु का अध्ययन वैज्ञानिक दृष्टि से करते हैं तो नवीन तथ्यों को आत्मसात करने से पहले उसे तार्किकता, सत्यता, औचित्यता एवं उद्देश्यपूर्ण होने में परखते हैं। सम्प्रेषण व्यवहार में तर्क करना, विचार करना, प्रमाण प्रस्तुत करना, तुलना करना, प्रयोग द्वारा सिद्ध करना आदि कार्य किये जाते हैं, साथ ही क्रियात्मक ज्ञान, शारीरिक, मानसिक, आत्मिक विकास सभी को समान रूप से महत्व दिया जाता है।

शिक्षण प्रक्रिया में हमें कई अवसरों पर प्रशिक्षण की आवश्यकता पड़ती है। विशिष्ट बालकों की शिक्षा में, आदत निर्माण में, अनुबन्धन आदि में आचरण तथा व्यवहार के परिवर्तन पर अधिक बल दिया जाता है तथा व्यवहार परिवर्तन के लिये प्रयास एवं अभ्यास पर अधिक बल दिया जाता है। इन अवसरों पर सम्प्रेषण की कला बहुत आवश्यक है। यदि अध्यापक, प्रशिक्षण योग्य बालकों को उपचारात्मक अनुदेशन देगा, आदत निर्माण में आत्मीयता का भाव रखेगा तभी सम्प्रेषण में कलात्मकता होगी। सम्प्रेषण व्यवहार, समझदारी के विकास को अधिक महत्व

देता है। अनुदेशन के समय घटना या परिस्थिति के पीछे निहित कार्य–कारण सम्बन्ध को स्पष्ट करना जरूरी हो जाता है। यह स्पष्टीकरण क्यों और किसलिए जैसे प्रश्नों के उत्तर देते समय आवश्यकत होता है। प्रमाण देते समय, विश्लेषण करते समय, व्याख्या आदि में सम्प्रेषण व्यवहार समझदारी पूर्वक करने की आवश्यकता होती है।

सम्प्रेषण में दक्षता

अध्यापक में सम्प्रेषण की दक्षता आवश्यक है। दक्षता के लिये आवश्यक है कि अध्यापक, समप्रेषण अन्तराल को न्यूनतम स्तर पर लाने में सिद्धहस्त हो। जिसके लिये अनेक उपाय किये जा सकते हैं जैसे – जनसंचार के माध्यम आदि का प्रयोग करना, आकाशवाणी या दूरदर्शन में विद्यालयी क्रियाकलापों के कार्य वितरण का प्रसारण करना, अध्यापक–अभिभावक समपर्क, विशेष सम्मेलन गोष्ठी, मौखिक संवाद आदि। आज तमाम आधुनिक दृश्य, श्रव्य तथा दृश्य–श्रव्य सामग्री सम्प्रेषण के लिए मौजूद हैं। इसलिए अध्यापक को आधुनिक साधनों का विधिवत ज्ञान हो, वह शिक्षण में इनका उचित अवसरों पर प्रयोग कर सकें। डॉ. जी.सी. भट्टाचार्य ने अपनी पुस्तक ''अध्यापक शिक्षा'' में सम्प्रेषण दक्षता के लिये निम्नलिखित कार्यों को अवश्यक बताया है –

भाषागत अशुद्धियों को कम करना, नियोजित ढंग से शिक्षण कार्य करना, कथन कला में दक्षता अर्जन करना, स्वारोह का उपयुक्त स्तरीय बनाना, छात्र अनुग्रहण पर ध्यान देना, सरल दृष्टान्त और प्रयोगों का उल्लेख करना, भाषा में रोचकता उत्पन्न करना (उपयुक्त मुहावरा, लोकोक्ति, कथन–दृष्टान्त या कोटेशन आदि) का प्रयोग करते हुए शिक्षण कार्य करना, अधिगम सम्प्राप्ति का निरन्तर परीक्षण करते हुए शिक्षण को अग्रसारित करना आदि अनेक ऐसे उपाय हं जिनके आधार पर प्रशिक्षण प्रदान करने पर ही अध्यापकीय तैयारी सम्भव है। व्याख्या, दृष्टान्त, उद्दीपन परिवर्तन, पुनर्बलन जैसे शिक्षण कौशल इस दिशा में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

सम्प्रेषण में बाधाएं

सम्प्रेषण में अनेकों बाधाएं सम्प्रेषण को बाधित कर सकती हैं। सम्प्रेषण की प्रवाहशीलता खत्म कर सकती है या सम्प्रेषण को अप्रभावी बना सकती हैं। सबसे पहली आवश्यकता है छात्रों का मस्तिष्क निर्मल हो। जिसके लिये छात्रों की दिनचर्या व्यवस्थित हो वह उन्हें निर्मल मन से जिज्ञासु बनाने के लिये प्रेरित करें। क्योंकि जब तक मन, विषय सामग्री पर केन्द्रित नहीं होगा तब तक सम्प्रेषण का कोई लाभ नहीं। श्रीमद्भगवद्गीता में जब अर्जुन, भगवान श्रीकृष्ण से कहते हैं कि मन बहुत चंचल है, यह हठपूर्वक इधर–उधर भाग जाता है, इसे बांधना तो हवा के बांधने के समान है तो भगवान श्रीकृष्ण, अर्जुन को समझाते हैं कि अभ्यास से यह कार्य सम्भव है। जो व्यक्ति अपने आप को जीत लेता है, मन पर नियन्त्रण स्थापित कर लेता है, वह अपना स्वयं में मित्र है जो ऐसा नहीं कर सकते वे अपने में प्रतिस्वयं शत्रु सा व्यवहार करते हैं। अर्थात् आत्म संयम से ही ध्यान और धारणा की शक्ति बढेगी, जिससे विषय वस्तु पर ध्यान केन्द्रित करने में कठिनाई न होगी और मन स्थिर और निर्मल हो जायेगा। शिक्षक को चाहिए कि वे बालकों के मानसिक विकास हेतु उन्हें अच्छी पुस्तकें पढ़ने को दें, माता–पिता से सम्पर्क बनायें व बालकों में सदैव अच्छे गुणों के विकास के लिये प्रयत्नशील रहें। स्वयं अपने आपको आदर्श जीवन शैली में ढालें क्योंकि 90 प्रतिशत बालक उससे सीखते हैं जो हम कहते व करते हैं। जब बालकों को मानसिक बुराईयाँ नहीं घेरेंगी तभी वह सब कुछ सीख सकेगा। आप सम्प्रेषण के साधनों का चाहे जो भी प्रयोग करें, आवश्यकता यह है कि वह उद्देश्य केन्द्रित रहे तथा बालकों में मानसिक चेतना लाये। यदि शिक्षक प्रभावी रूप से शिक्षण नहीं कर रहा है अर्थात् विषय वस्तु पर स्वामित्व का अभाव है, या नियोजन दोषपूर्ण है या बालमनोविज्ञान की बिना जानकारी के, शिक्षक विषय वस्तु थोप रहा है तो प्रभावी सम्प्रेषण नहीं हो पायेगा। सावधानियाँ दोनों तरफ से अपेक्षित हैं। बालक जब मानसिक रूप से विषय सामग्री के प्रति तैयार होगा तभी सम्प्रेषण भी होगा। यह सच है कि सम्प्रेषण कौशल से विषय सामग्री की नीरसता दूर की जा सकती है व पाठ्य सामग्री बालकों के लिये रूचिकर बनाई जा सकती है। फिर भी यह आवश्यक है कि इन कौशलों का प्रयोग भी विषय सामग्री एवं छात्र के मानसिक स्तर के हिसाब से करना होगा। आज जब शिक्षा के सार्वभौमिकरण की बात हो रही है, तब शिक्षक के लिये यह आवश्यक है कि दूरस्थ शिक्षा तथा अन्य आधुनिक उपकरणों के संचालन में भी दक्ष हो। बालकों को वह नवीन टैक्नोलॉजी से जोड़ने का प्रयास करें ओर सम्प्रेषण की कुशलताओं को अपनाकर सम्प्रेषण की बाधाओं को दूर करें।

मूल्यांकन

सम्प्रेषण की विधियों, साधनों का विभिन्न शैक्षिक परिवेश में मूल्यांकन करना चाहिए, जिससे शिक्षक को अपने कक्षागत व्यवहार में परिवर्तन करने के कारण ज्ञात हो सकेंगे। साथ ही मूल्यांकन के लिये क्रियात्मक अनुसंधान की कार्यविधि अधिक उपयोगी है।

अंततः कहा जा सकता है कि सम्प्रेषण की कुशलता प्रभावी शिक्षण हैं। अतः शिक्षक सम्प्रेषण के सोपानों का प्रयोग करते हुए छात्रों के अधिगम स्तर का मूल्यांकन भी करें और मूल्यांकन के आधार पर वह छात्रों के लिये निन्दात्मक तथा सम्प्रेषण तकनीकी का प्रयोग छात्रों की आयु व स्तर के अनुकूल बनायें। उन कारणों पर भी विचार करें जो सम्प्रेषण में बाधा उत्पन्न करते हैं। इस विस्तृत प्रक्रिया के कारण ही अध्यापक शिक्षा में सम्प्रेषण की कला के महत्व पर बल दिया जा रहा है जिससे अध्यापक, बालकों की समस्याओं को व्यवहारिक रूप में हल कर सकें।

सन्दर्भ :

1. दुबे, सत्यनारायण (2009), अध्यापक शिक्षा, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन, पृष्ठ – 55, 66, 75 ।
2. श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय चौथा, श्लोक नं. 34 ।
3. श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय छठा, श्लोक नं. 34 व 35 ।
4. सिंह, एल.सी. (2006–07), सूक्ष्म शिक्षण : सिद्धान्त, अनुसंधान एवं अभ्यास, आगरा, एच.पी. भार्गव बुक हाउस।
5. कथूरिया, रामदेव प्रसाद (2007–08), सूक्ष्म अध्यापन एवं शिक्षण प्रतिमान, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
6. भटनागर, ए.बी., भटनागर, मीनाक्षी व भटनागर, अनुराग (2010), अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया, मेरठ, आर.ला. बुक डिपो, पृष्ठ – 25 एवं 26 ।

7. त्रिपाठी, शालिग्राम (1996), शिक्षण पद्धति, नई दिल्ली, राधा पब्लिकेशन्स।
8. मेहता, सी.एस. व जोशी, दिनेश चन्द्र : शिक्षक प्रशिक्षण के सिद्धान्त एवं समस्याएँ, जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
9. भट्टाचार्य, जी.सी. (2006–07), अध्यापक शिक्षा, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
10. सक्सैना, एन.आर. स्वरूप (2010), अध्यापक शिक्षा, मेरठ, आर. लाल बुक डिपो।
11. शर्मा, आर.ए. (2010), अध्यापक शिक्षा, मेरठ, आर. लाल बुक डिपो।
12. मिश्रा, मन्जू, पाठ्यचर्चा विकास एवं सूक्ष्म शिक्षण, लखनऊ, आलोक प्रकाशन।
13. पासी, बी.के. (2013), कक्षा अर्न्तक्रिया प्रक्रिया, आगरा, राखी प्रकाशन।